'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ११२ | वाराणसी, गुरुवार, १ अक्टूबर, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

जम्मू १०-९-'५९

पार्टियाँ आग लगानेवाली हैं, ! सियासत तोड़नेवाली है !!

बचपन में हमने एक कविता पढ़ी थी। आत्मस्तुति, परनिंदा और मिथ्या भाषण—ये तीन बातें नहीं करनी चाहिए। यह उस कविता में था, लेकिन इलेक्शन में यही तीनों बातें होती हैं। हर-एक पार्टी दूसरों की निंदा करेगी, अपनी स्तुति करेगी और लोगों के पास पहुँचकर लोगों के टुकड़े करेगी। गाँव को कायम के लिए आग लगा देगी। पार्टीवाले तो वोट लेकर चले जायँगे, लेकिन गाँवों में हमेशा के लिए फूट डाल जायँगे। छोटे-छोटे गाँवों में हमेशा यही चलता रहेगा कि इसने हमारे खिलाफ वोट दिया और उसने हमारे खिलाफ दिया। भागवत में वर्णन आता है कि जब गोकुल में आग लगी थी, तब भगवान कृष्ण वह आग पी गये। आज आग लगानेवाले तो बहुत हैं, लेकिन आग पीनेवाले कौन हैं ?

नयी पार्टी क्या कर लेगी ?

इधर गाँवों में आग लगेगी उधर पार्टीवाले हुकूमत करेंगे, पाँच साल के लिए राज्य करेंगे। इस जमाने के पाँच साल याने पुराने जमाने के पचास साल। अकबर बहुत बड़ा बादशाह था। उसने कितने साल राज्य किया ? पचास साल से ज्यादा नहीं। आज के इस जमाने में उसके राज्य-काल जितना राज्य पार्टीवाले कर लेते हैं। साइन्स के जमाने में यह ताकत आ गयी है कि पाँच साल में ही एक-एक राज्य हो जाता है। मान लीजिये, हुकूमत करनेवाली पार्टी ने अपने हुकूमत-काल के पाँच सालों में कोई नयी स्कीम शुरू की और उसमें करोड़ों रुपये खर्च किये। लेकिन वह स्कीम पाँच साल में पूरी नहीं हो सकी। इसलिए आगे के पाँच साल में जो दूसरी पार्टी आयेगी, उसको न चाहते हुए भी उस स्कीम को चलाना ही पड़ेगा। उसे वह अधूरा काम करना ही होगा। इसलिए जो नयी पार्टी आयेगी, वह बहुत ज्यादा फर्क नहीं कर सकेगी। मैं कहना यह चाहता हूँ कि आप जिनको सरकार में भेजेंगे, उनके हाथ में पूरी सत्ता आ जायगी परन्तु गाँव की ताकत तो नहीं बनेगी। गाँव की ताकत को बनाने के लिए, बढ़ाने के लिए आपको लोक-शक्ति बढ़ानी होगी। लोक-शक्ति का बढ़ना ही इसका एकमात्र जरिया है।

वाच्यार्था निहिताः सर्वे

कहा जाता है कि डेमोक्रेसी में विरोधी पार्टी रहती है तो उसका सरकार पर दबाव रहता है और हुकूमत करनेवाली पार्टी गलत काम करने से बचती है। परन्तु समझने की बात यह है कि जिनके हाथ में हुकूमत रहती है, वे तो सत्ता चाहनेवाले होते ही हैं और जो अपोजिशन करनेवाले होते हैं, वे सत्ता अपने हाथों में लेना चाहते हैं। याने सभी का नाम सत्ता के ही इर्द-गिर्द चलता है, इससे लोगों की सेवा नहीं बनती, सिर्फ झगड़े होते हैं। कुल मिलाकर सब पार्टियों की शक्ति चुनाव में लगती है, इसलिए शुद्ध सेवा नहीं होती और न किसी भी विषय पर निष्पक्ष राय ही प्रगट होती है। आज तो जो भी राय प्रगट करेगा, वह अपने पक्ष के हित के लिए ही करेगा। मान लीजिये, कल अकाल पड़ा, लोग चिल्लाने लगे तो अपोजिशन करनेवाली पार्टी उसका नाजायज फायदा उठाने की कोशिश करेगी। जब अपोजिट पार्टी का यह रूप होगा तो हुकूमत करनेवाली पार्टी उससे ठीक उल्टी दिशा ग्रहण करेगी। एक पार्टीवाला नेता दूसरी पार्टीवाले को गाली देगा और दूसरी पार्टीवाला पहली पार्टीवाले को। दोनों की बातें जनता सुनेगी तो वह उन दोनों की निन्दा करेगी। फिर किसी-के भी शब्दों पर लोगों को भरोसा नहीं रह जायगा। जहाँ शब्दों पर से विश्वास उठा, वहाँ व्यवहार-शुद्धि नहीं रह सकती। मनु महाराज ने कहा है "वाच्यार्था निहिताः सर्वे वाङ्मूला वाङ्-विनिःसृताः" जिसने वाणी की चोरी की, उसने सब कुछ चोरी कर ली। यह जरूरी है कि एक-दूसरे के शब्दों पर विश्वास किया जाय।

सत्ताधारी और विरोधी दलों की हालत

जो पार्टी अपोजिशन में होती है, वह बढ़ा-चढ़ाकर बातें करती है। यह बात हमने हिन्दुस्तान के हर सूबे में देखी और कश्मीर में भी देखी। इसी बात पर मैंने अपनी राय जाहिर करते हुए कहा था कि जो पार्टी राज्य करती है, उसकी ओर से गलतियाँ भी होती हैं। लेकिन हुकूमत करनेवालों के मुँह पर ताले लगे हुए होते हैं। वे उस गलती को जान करके भी जाहिर नहीं कर सकते। अगर वे जाहिर करते हैं तो उनपर अनुशासन-भंग की कार्रवाई होती है। उधर जो मुखालिफत करनेवाली पार्टी के लोग हैं, उनके मुँह पर ताला नहीं है। वे मुँहफट होते हैं। जो चाहे, सो बकने लगते हैं। हर बात को बढ़ा-चढ़ाकर रखते हैं। नतीजा यह होता है कि जनता का दोनों पार्टियों पर भरोसा नहीं रहता। जहाँ लोगों का भरोसा उठा, वहाँ देश की परिस्थिति अच्छी नहीं रह

www.vinoba.in

सकती। बड़े-बड़े नेता जोड़ने का काम नहीं करते, तोड़ने का काम करते हैं। तब देश की ताकत कैसे बढ़ सकती है।

गैरजानिबदार सेवकों की जरूरत

मान लीजिये, डेमोक्रेसी में मुखालिफत करनेवाली पार्टी की जरूरत रहेगी। लेकिन फिर भी एक ऐसी तटस्थ, गैरजानिबदार जमात होनी चाहिए, जो सरकार की गलतियों को उसके सामने तटस्थ भाव से रख सके और लोगों के सामने भी रख सके। यह पार्टी सियासी पार्टी से अलग रहेगी। अगर अलग न रही तो देश की ताकत नहीं बन सकेगी। सियासी पार्टियाँ क्या करती हैं, यह तो आपने केरल में देख ही लिया। सभी मिल कर केरल पहुँचे। हमने अखबारों में पढ़ा कि आज यह गया, आज वह गया। बड़े-बड़े मिनिस्टर वहाँ पहुँचे। सबने आकर आखिर किया क्या? केरल के एक मिनिस्टर ने हमें टेलिग्राम भेजा कि 'आप यहाँ आइये और यहाँकी स्थिति में सुधार कीजिये। हम पीरपंजाल लाँघकर कश्मीर-वैली में पहुँचे, तब वह टेलिग्राम हमें मिला। मिलते ही हमारे मुँह से निकला कि 'सब तो वहाँ पहुँच गये। अब हमारा ही जाना बाकी रहा है!' सबने मिलकर वहाँ जो किया, वह तो आपने देख ही लिया। इसलिए मैं कहता हूँ कि बड़े-बड़े नेता दिलों को जोड़ने का नहीं, दिलों को तोड़ने का ही काम करते हैं, इसमें कोई शक नहीं।

हिंदुस्तान पुरानी सियासत के रास्ते पर चलता रहेगा तो देश की ताकत नहीं बनेगी। इसलिए सियासत से अलग होकर एक ऐसी जमात बनानी चाहिए, जो अलग-अलग पार्टियों के बीच में जहाँ भी घर्षण हो, वहाँ तेल डाल सके, स्नेह दे सके। सेवा-परायण, सत्यनिष्ठ और स्नेह बढ़ानेवाली जमात के लोग तटस्थ होकर हुकूमत करनेवाली पार्टी की तथा दूसरी पार्टियों की गलतियाँ बतायेंगे। और सहानुभूतिपूर्वक उन्हें सुधारने की कोशिश करेंगे तो देश में एक नैतिक ताकत बनेगी।

समग्र दृष्टिवाले इन्सान की जरूरत

आज देश में कुछ घोड़े हैं, कुछ गधे, कुछ हाथी हैं, कुछ हिरन, लेकिन इन्सान नहीं हैं। इन सबसे काम लेनेवाला और इनपर अंकुश रखनेवाला इन्सान चाहिए, जो घोड़े से घोड़े के नाते, गधे से गधे के नाते काम ले सके। घोड़ा, गधा, हाथी, हिरन आदि सभी काम के हैं। उनका उपयोग करनेवाला चाहिए। आप कहेंगे कि मैंने पार्टियों से जानवर की उपमा दी। लेकिन यह तो एक विनोद है। जानवर चारों ओर से नहीं देख सकता। वह एक बाजू से देखता है। उसकी दृष्टि एकांगी होती है। सर्वांगी दृष्टि इन्सान की होती है। पार्टियों में सर्वांगी दृष्टि नहीं है। इसीलिए पार्टीवालों को सब दूर सर्वांग दर्शन नहीं होता। मेरे इस कथन से आप यह न समझ लें कि सियासी पार्टियों में कोई इन्सान ही नहीं है। इन्सान तो है ही, लेकिन पार्टियों का ढाँचा ही ऐसा है कि वे सर्वांगीण दृष्टि से देख नहीं सकते।

मैं जो गैरजानिबदार लोगों की बात कह रहा हूँ, वह सियासी पार्टीवाले भी महसूस करते हैं। इसीलिए तो राष्ट्रपति, असेम्बली के स्पीकर, सरकारी नौकर, हाई-कोर्ट के जज, शिक्षक और फौज आदि के लोग जानिबदार हों, ऐसा तय है। क्या आप पसन्द करेंगे कि फौज किसी एक पार्टी की हो? नहीं। चाहे राज्य कांग्रेस का हो या और किसीका, फौज तो गैरजानिबदार ही होनी चाहिए। शिक्षक, जज, कर्मचारी भी गैरजानिबदार ही होने चाहिए। आज हैं या नहीं हैं, यह अलग बात है। इस समय जिस पार्टी की सरकार होती है, उस सरकार का उन सभी लोगों पर असर होता है। इसे हम नहीं भूल सकते।

काश, ऐसा हुआ होता!

गांधीजी चाहते थे कि कांग्रेस गैरजानिबदार संस्था होकर काम करे। जिस दिन वे गये, उस दिन उन्होंने अपनी यह इच्छा लिखी थी कि कांग्रेस लोक-सेवक संघ में पुष्पित एवं फलित हो। वह सियासी पार्टी न रहकर गैरजानिबदार जमात बन जाय और सत्ता पर तथा समाज पर नैतिक अंकुश रखे। कांग्रेस अगर ऐसा करेगी तो अपने पुराने पुण्य में वृद्धि होगी। गांधीजी ने कहा, लेकिन उनके साथियों को यह बात जँची नहीं। मैं उन्हें भी दोष नहीं देना चाहता। हरएक के सोचने का ढंग होता है और हरएक का दिमाग भी अलग होता है। उस समय देश में परिस्थिति भी कुछ ऐसी थी कि लाखों लोग इधर से उधर और उधर से इधर आ-जा रहे थे। वैसी परिस्थिति में शायद हम वह काम करने की शक्ति में नहीं हैं, ऐसा गांधीजी के साथी महसूस कर रहे थे। इसीलिए उन्होंने बापू की इच्छा के अनुकूल कदम नहीं उठाया होगा। खैर, अगर गांधीजी की बात मानी होती तो कांग्रेस आज सेवापरायण संस्था होती और अपने निष्पक्ष बयानों से नैतिक असर डालनेवाली जमात बनती। वह आज नहीं बन सकी है और जिसका बनना निहायत जरूरी है।

सर्व-सेवा-संघ

इस समय देश में एक छोटी-सी जमात काम कर रही है, वह है सर्व-सेवा-संघ। मैं उस संस्था का सदस्य नहीं हूँ। मैं किसी भी संस्था का सदस्य नहीं हूँ। सिर्फ व्यक्ति के नाते सलाह देता हूँ। मेरी सलाह किसीको अच्छी लगे और वह माने तो मुझे लगता है और किसीको न जँचे, तब भी वह माने तो मुझे अच्छा नहीं लगता। जिसे मेरी बात न जँचे और वह न माने, तब मुझे खुशी होती है। इस तरह वह माने या न माने—दोनों हालतों में मुझे खुशी ही है। मैं सर्व-सेवा-संघ का सदस्य नहीं हूँ। फिर भी उस जमात के साथ मेरा ताल्लुक है। वह एक अच्छी जमात है। गांधीजी ने तालीमी संघ, चरखा-संघ, गोसेवा-संघ आदि रचनात्मक संस्थाएँ बनायी थीं। उन संस्थाओं की एक ताकत बने, ऐसा सोचकर एक मिलापी संघ, सर्व-सेवा-संघ बना। वह इतना बड़ा बना, तब भी उतना बड़ा नहीं बन सका, जितना कांग्रेस बनती। कांग्रेस वैसा नहीं बन सकी, इसलिए अभी सर्व-सेवा-संघ के लोग काम कर रहे हैं।

लोक-सेवकों का काम

हिंदुस्तान में लगभग ४-५ हजार सेवक हैं। सेवक बनाने के लिए एक प्रतिज्ञा-पत्र भी बनाया गया है। उसके मुताबिक एक जिले में दस सेवक हो जायँ तो वे सभी मिलकर एक राय से एक व्यक्ति को चुनें, जो सर्व-सेवा-संघ का प्रतिनिधि मान लिया जाय। ऐसे एक जिले में दस-पंद्रह सेवक बनते हैं और वे सब मिलकर हिंदुस्तान में लोकशक्ति बढ़ाने का काम करते हैं।

लोकसेवकों की ताकत लगने से हिंदुस्तान में सर्वोदय-समाज बनेगा। वह सत्ता पर, समाज पर नैतिक अंकुश रखेगा। गाँव-गाँव में ग्राम-स्वराज्य लाने की कोशिश करेगा और जब तक

www.vinoba.in

ग्राम-स्वराज्य नहीं आता है, तब तक उसके लिए हवा तैयार करने का काम करेगा। यह छोटा-सा अनुक्रम है, लेकिन इसके आधार पर कुल दुनिया में ऐसी जमात बनायी जा सकती है, जो शांति की स्थापना में कामयाब हो सकती है।

सर्वोदय की जरूरत

जम्मू और कश्मीर में भी लोक-सेवक बनेंगे। बन सकते हैं। उसके लिए जो प्रतिज्ञाएँ हैं वे कठिन नहीं हैं। आप प्रतिज्ञाओं को देखें, लोक-सेवक बनें और सब मिलकर ग्रामस्वराज्य लाने के लिए गाँव-गाँव में जाकर काम करें। विकेंद्रित सत्ता को और समाज को एकरस बनाने की बात करें। आज समाज टूट-फूट गया है। सत्ता केंद्रित हो गयी है। इसलिए हम चाहते हैं कि सारा समाज एक बने और सत्ता विकेंद्रित हो।

कश्मीर में हमारी ३०-४० जमातों से मुलाकात हुई। इससे मुझे यहाँकी हालत के बारे में वह ज्ञान हुआ, जो पहले नहीं था। यहाँ भी सर्वोदय-समाज की जरूरत है। मुझे विश्वास है कि उस जरूरत को आप पूरा करेंगे और यहाँ सर्वोदय-समाज बनायेंगे क्योंकि यहाँकी फिजा उसके लायक है। ◆◆◆

[गतांक से समाप्त]

◆

स्वागत-प्रवचन

सुजानपुर (पंजाब) २१-९-'५९

सारी दुनिया में सर्वोदय हो ! सारी दुनिया सर्व-सेवा-संघ बने !!

अभी हम कश्मीर की यात्रा समाप्त करके फिर से पंजाब आये हैं। कश्मीर में हमने जो प्रेम पाया, उसको अपने साथ लेकर मैं यहाँ आया हूँ और यहाँ भी प्रेमियों का दर्शन फिर से पाकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। हमारे मित्र सब दूर फैले हुए हैं। हमारे कुछ कार्यकर्त्ता गाँव-गाँव घूमते हैं, भूदान, ग्रामदान, सर्वोदय-पात्र, शांति-सेना का विचार लोगों को समझाते हैं तो कुछ मित्र खादी, ग्रामोद्योग के काम में लगे हुए हैं और कुछ ऐसे भी हैं, जो सरकार के अन्दर गये हैं और वहाँ सर्वोदय-विचार जितना पैठा सकते हैं, पैठाने की कोशिश कर रहे हैं। कुछ मित्र सरकारी नौकरी में हैं। वे कम्युनिटी प्रोजेक्ट वगैरह में काम करते हैं और कोशिश करते हैं कि सर्वोदय का काम लोगों में प्रिय हो। हमारे कुछ मित्र मुख्तलिफ सियासी पार्टियों में हैं और वहाँ भी अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार सर्वोदय की प्रतिष्ठा के लिए जितना बन सकता है, करते हैं। इस तरह हमारे मित्र सर्वत्र फैले हुए हैं। किसान और मजदूर तो हमारे मित्र हैं ही।

सर्वोदय ही मार्ग है

अब आप देखेंगे कि हमारे मित्र सारी दुनिया में फैले हुए हैं। अभी क्रुश्चेव अमेरिका में गया है और ऐसी बात बोलता है, जो हम सर्वोदय के प्लेटफार्म पर बोलते हैं। मुझे इसमें तनिक भी संदेह नहीं है कि दुनिया को या तो सर्वोदय कबूल करना है या सर्वनाश। इन दो के सिवाय तीसरा रास्ता नहीं है और यह लाजमी है कि साइन्स के जमाने में दुनिया सर्वोदय को ही कबूल करे। इसमें कम-बेसी देरी हो तो वह बात अलग है। सर्वोदय का रूप अलग-अलग देश में, समाजों में और परिस्थिति में अलग-अलग होगा। हिंदुस्तान में सर्वोदय-विचार माननेवाले जिन औजारों से उत्पादन करेंगे, उन्हीं औजारों से सर्वोदय के विचारक अमेरिका में काम नहीं करेंगे। वहाँ पर दूसरे औजार इस्तेमाल किये जायँगे। इसलिए औजार तो अलग-अलग इस्तेमाल होंगे, जिन्दगी का स्वरूप अलग-अलग होगा, लेकिन सर्वोदय का जो मूलभूत विचार है कि भगवान ने हमें जो चीजें दी हैं—जमीन, दौलत, जिस्मानी ताकत, अक्ल और अन्य शक्तियाँ भी इसीमें शामिल हैं वे सब हमारे लिए नहीं हैं, सबके लिए हैं। हमारे पास वह एक धरोहर है, हम उसके ट्रस्टी हैं, उन चीजों का उपयोग हमें दुनिया के लिए करना है। यह मूलभूत विचार कायम रहेगा। इस तरह दुनिया को अब सर्वोदय के बगैर चारा नहीं है।

नित-नया सर्वोदय

कुछ लोगों का खयाल है कि भूदान, सर्वोदय का विचार चार-पाँच साल तक कुछ चला, लेकिन अब मन्द पड़ा है। मेरा खयाल उससे उल्टा है। मैं मानता हूँ कि सर्वोदय का चिन्तन करनेवाले हिंदुस्तान में गहरे जा रहे हैं और बाहर वह विचार व्यापक हो रहा है। पहले वह हिंदुस्तान में व्यापक पैमाने पर फैलता था। जिस तरह वह हिन्दुस्तान में फैला, वैसे वह आज दुनिया में फैल रहा है। रूस, अमेरिका इंग्लैंड वगैरह सब देश उसे पकड़ लेंगे और हम हिंदुस्तान में और गहरे चले जायँगे। हम उनसे कहेंगे कि हमारा छोड़ा हुआ विचार आपने लिया था, अब और नया विचार लीजिये। जिस तरह आज हम, पाकिस्तान वगैरह देश पश्चिम के देशों के छोड़े हुए हथियार खरीदते हैं, उनके लेटेस्ट, आखिरी हाथियार हमें नहीं मिलते हैं, उसी तरह हम और गहरे जायँगे और जिन्होंने यह माना कि हम थक गये हैं, हमारी प्रतिभा थक गयी है, भूदान-ग्रामदान अब उतना नहीं चलता है, वे समझे नहीं हैं कि हम गहराई में जा रहे हैं और हमारा पुराना विचार दुनिया में फैल रहा है। हम और नयी ईजाद कर रहे हैं। सर्वोदय को, ब्रह्मविद्या की और साइन्स की यह खूबी है कि उसमें नयी-नयी ईजादें होती रहती हैं। ये तीन चीजें ऐसी हैं, जो नित्य नयी बनती हैं। दस साल के पहले उनका जो रूप था, वह आज नहीं है। चार महिने पहले मैं जो बोलता था, वह अब कश्मीर-यात्रा के बाद नहीं बोलूँगा। नित-नया बोलूँगा। यह नित्य नया रूप धारण करने की शक्ति सर्वोदय में है। उसके दो रूप हैं—ब्रह्मविद्या और साइन्स। हिरोशिमा पर जो एटम बम गिरा था, उससे हजार गुना ताकतवाला बम अब बना है और बम रखनेवाले आज अमेरिका में इकट्ठा हो रहे हैं। क्रुश्चेव कह रहा है कि कुल-के-कुल हथियार डुबो दिये जायँ। बिल्कुल ठीक यही समझ लो कि विनोबा बोल रहा है। याने पूरा-का-पूरा डुबोने की बात जैसे हम करते हैं, वैसे ही उसने की है। साथ-साथ ऐसा भी कहा है कि वैसा न हो तो और भी बातें की जायँ। आज उसके मुँह से वह चीज निकली है। कल उसके हाथ से वह काम होगा। जो चीज आज दिमाग में आती है, वह कल अमल में आती है। पहले संकल्प होता है, फिर वाणी के जरिये प्रगट होता है और हाथ से काम होता है। आज तोताराम बोल रहा है सीता-राम, सीता-राम। आज तो वह तोताराम है, लेकिन कल करनेवाला राम होगा। इसलिए अगर कोई मायूस हुआ हो कि सर्वोदय का काम तो अब हो चुका है, अब पंचवर्षीय योजना ही चलानी है तो इसका मानी यही है कि वह सर्वोदय को ठीक से समझा नहीं।

www.vinoba.in

खादीवाले शान्ति-सैनिक भी हैं

यहाँपर खादी के कार्यकर्ता बैठे हैं। हम समझते हैं कि सब के सब खादी-कार्यकर्ता शांति-सैनिक हैं। क्योंकि वे शांति का काम कर रहे हैं। समाज में अशांति जो होती है, उसका एक बड़ा कारण बेकारी है, इसलिए जो लोग बेकारी मिटाने के काम में लगे हैं, क्या वे शांति-सैनिक नहीं हैं? अगर नहीं हैं तो वैसा कहें। मगर मैं उनसे पूछूँगा कि वे शांति-सैनिक कैसे नहीं हैं? सामने झगड़ा चल रहा है तो क्या वे यूँ कहकर भागेंगे कि हमारा काम तो खादी या वूलन कपड़ा बेचना है? वे इस तरह कहेंगे भी तो क्या दुनिया में कोई उनका कपड़ा खरीदेगा? समझना चाहिए कि खादी की प्रतिष्ठा इसीलिए है कि उसके वास्ते हम जिंदगीभर काम करेंगे और मर मिटने का मौका आयेगा तो मर मिटेंगे। जो माँ बच्चे की परवरिश करती है, उसके लिए मेहनत करती है, वह बच्चे पर खतरा आने पर क्या उसे छोड़ देगी? भाग जायगी? मानवी माँ की बात तो क्या कहें, किसी जानवर की माँ भी इस तरह नहीं भागती है। शेरनी का बच्चा किसीने पकड़ लिया तो शेरनी पकड़नेवाले पर बार-बार हमला करती है और वह तब तक हमला करती रहती है, जब तक उसे कत्ल नहीं कर डालती। शेरनी अपने बच्चे के बचाव के लिए मर मिटती है। क्योंकि उसने उसका पालन किया होता है। तो क्या खादी-कार्यकर्ता उसके बचाव के लिए नहीं मर मिटेंगे? जिंदगीभर चौबीसों घंटे वे खादी की हिफाजत करेंगे और जब उसपर प्रहार होने का मौका आयेगा तो क्या वे भाग जायँगे? ऐसा न कभी हुआ है और न होगा। बिहार में वैद्यनाथ बाबू ने शांति-सैनिकों के लिए माँग की तो पचासों खादी-कार्यकर्ता शांति की स्थापना का काम करने के लिए चले गये। दूसरे लोग बिना हथियार के जाने में डरते थे। लेकिन खादीवाले निःशस्त्र होकर वहाँ गये और उन्होंने वहाँ कुछ काम किया। इससे सबूत मिल गया। इसीलिए मैं कहता हूँ कि खादीवाले भी शांति-सैनिक, लोक-सेवक ही हैं।

सर्वव्यापी सर्वोदय

इसपर पूछा जायगा कि फिर उन्हें फिर से वैसा लिखने के लिए क्यों कहते हो? फिर से प्रतिज्ञा लेने के लिए क्यों कहते हो? हम इसलिए कहते हैं कि अपनी जमात में सब तरह के विचार माननेवाले लोग इकट्ठा हुए हैं। हम लोक-सेवक-संघ की जो बापू की कल्पना थी, उसे नये सिरे से और नये प्रकार से रख रहे हैं। क्योंकि बापू तो चाहते थे कि कांग्रेस लोक-सेवक-संघ बने। अगर वह बनती तो बहुत बड़ी ताकत बनती और कुल हिन्दुस्तान में कई लोक-सेवक बनते, हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी जमात लोक-सेवक-संघ बनती। लेकिन हम तो छोटी जमात हैं। इसलिए हम लोक-सेवक-संघ नहीं, बल्कि सर्व-सेवा-संघ बनाने का दावा कर रहे हैं। हम एक नम्र जमात हैं। लेकिन बापू ने जो उसूल रखे थे, उनपर हम काम करना चाहते हैं, इसलिए फिर से प्रतिज्ञा का इजहार करने की बात हमने रखी है। खद्दर के, ग्रामोद्योग के कार्यकर्ताओं में या सरकार के या दूसरी पार्टियों में पहुँचे हुए लोगों में मैं कोई फर्क नहीं करता हूँ। बल्कि मैं मानता हूँ कि वे सर्वोदय को मानते हैं। इसपर अगर कोई पूछे कि वे उस-उस स्थान पर क्यों रहे हैं तो उनकी तरफ से यही जवाब मिलता है कि हम लोक-सेवक संघ बनाकर अपने पूरे विचारवालों की ताकत बनाना चाहते हैं। दूसरी पार्टियों में जो हमारे सह-विचारवाले पड़े हैं, उन सबकी सहानुभूति लेकर हम आगे बढ़ना चाहते हैं। इस तरह हमारी दुहरी प्रतिज्ञा है। हमने अपनी प्रतिज्ञा में कुछ बातें लाजमी मानी हैं। हम ऐसा समूह बनाना चाहते हैं, जो कि खमीर बने। लेकिन खमीर डरपोक नहीं होता है। वह अलग रहेगा तो क्या खमीर कहलायेगा? वह तो दूध के अन्दर घुसता है, पैठता है, लेकिन दही अच्छा हो तो दूध में पैठ सकता है। हम जामन का दही अलग रखते हैं, ताकि वह ठीक से किसी भी दूध में जाकर उसे दही बनाये। उसी तरह का जामन हम बनाना चाहते हैं।

स्टैंडिंग आर्मी

एक तरफ से हम लोक-सेवक-संघ जैसा बना रहे हैं, वह इसलिए नहीं कि हमारे विचार के जो भाई मुख्तलिफ जगहों में बैठे हैं, उन्हें हम दूर करना चाहते हैं, बल्कि इसलिए कि जो लोग जगह-जगह बैठे हैं, उनको ताकत मिले। मैं चाहता हूँ कि हमारे कुछ लोग पोस्ट-टेलिग्राफ में हों, कुछ रेलवे में हों, कुछ मिलिटरी में हों, कुछ मुख्तलिफ पार्टियों में हों। हम चाहते हैं कि सारी दुनिया में सर्वोदय हो। सारी दुनिया सर्व-सेवा-संघ बने। इसलिए हमारे जो भाई रेलवे, पोस्ट, मिलिटरी वगैरह में होंगे, वे अकेले लड़ते हैं, ऐसा न हो, बल्कि उनके पीछे एक स्टैंडिंग आर्मी हो, इसलिए हम सर्व-सेवा-संघ व्यापक बना रहे हैं। यह बात क्या ताकत रखती है, इसको ठीक से समझना चाहिए। नहीं तो लोग मूरख होकर कहेंगे कि हमारी एक छोटी जमात बन रही है और हम सबसे कहते हैं कि तुम हमारे नहीं हो, हम से अलग रहो। समझना चाहिए कि हमारे जो भाई मुख्तलिफ जगहों पर हैं, वे अकेलापन महसूस न करें। बल्कि ताकत महसूस करें। इसीलिए हम नया सर्व-सेवा-संघ बना रहे हैं। हमारे एक भाई पंजाब की मिनिस्ट्री में हैं, दूसरे मैसूर की मिनिस्ट्री में हैं, तीसरे कश्मीर की मिनिस्ट्री में हैं—ऐसे हमारे जो भाई भिन्न-भिन्न जगहों पर हैं, उनके हाथ मजबूत हों और वे ताकत महसूस करें कि हमारे पीछे कोई ताकत है, इसीलिए हम एक स्टैंडिंग आर्मी बना रहे हैं।

आपने इस मकान का उद्घाटन मेरे हाथ करवाया। मकान ईंट-पत्थर का नहीं, बल्कि विचार का होता है।

मैं कश्मीर से यहाँ आया हूँ। मैंने वहाँ देखा कि एक भी ऐसा तबका नहीं रहा, न सियासी, न मजहबी जिसके साथ, मेरी खुल-कर बात न हुई हो। सबने महसूस किया कि यह अपना आदमी है। इससे मेरी ताकत बढ़ी है। वह बल लेकर मैं यहाँ आया हूँ और लोगों को दूर ढकेलने के लिए नहीं, बल्कि उन्हें ताकत महसूस हो, इसीलिए हम सर्व-सेवा-संघ जैसी एक जमात बना रहे हैं। यह जमात सेवा का काम करेगी। ◆◆◆

अनुक्रम

१. पार्टियाँ आग लगानेवाली हैं! सियासत तोड़नेवाली है!!
जम्मू १० सितम्बर '५९ पृष्ठ ६९५
२. सारी दुनिया में सर्वोदय हो! सारी दुनिया सर्व-सेवा-संघ बने!!
सुजानपुर २१ सितम्बर '५९ ,, ६९७

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पताः गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी
www.vinoba.in